>

Title: Need to ensure proper security and empowerment of women in Delhi and other parts of the country.

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): उपाध्यक्ष जी, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे एक लोक महत्व के विषय को उठाने का यहां मौका दिया। इस विषय की प्रासंगिकता इसलिए और बढ़ जाती है कि आज मेरा जो यह विषय स्वीकार हुआ है, सौभाग्य से आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है और सदन में भी माननीय सदस्याओं, स्पीकर साहिबा और अन्य सदस्यों ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण का संकल्प लिया है। भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय आज राष्ट्रपति भवन में आज उस निर्भया को स्त्री शक्ति के रूप में उसके साहस का सम्मान कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर अमेरिका में मिशेल ओबामा जो वहां की प्रथम महिला हैं, वह भी उस निर्भया के साहस को सम्मानित कर रही हैं।

उपाध्यक्ष महोदय: आपको क्या कहना है, यह बताएं।

श्री जगदम्बिका पाल : मैंने विषय शुरू किया है। उस 16 दिसम्बर की घटना ने पूरी दुनिया और हमारे देश को सोचने के लिए बाध्य कर दिया है कि आज महिलाओं की सुरक्षा, सशक्तिकरण समाज के लिए आवश्यक-आवश्यक अंग है, वहीं दूसरी तरफ 16 दिसम्बर के बाद आज भी लगता है कि जैसे दिल्ली पुलिस की व्यवस्था नहीं बदली है। एक महिला पत्रकार के साथ देश की राजधानी इसी दिल्ली की सड़कों पर छेड़खानी हुई और उसे 15 घंटे लगे पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने में, क्योंकि 15 घंटे तक उसकी रिपोर्ट नहीं लिखी गई। आज भी उस घटना के बाद जिस दिल्ली में या जस्टिस वर्मा की रिपोर्ट बने और आज भी 96 प्रतिशत महिलाएं अपने को यहां असुरक्षित महसूस करें तो हमें निश्चित तौर से इस विषय पर सोचना होगा। पिछले 145 दिनों में अगर 141 बलात्कार की घटनाएं होती हैं।

उपाध्यक्ष महोदय: आपकी सरकार से क्या मांग है, यह बताएं।

श्री जगदम्बिका पाल : मेरी सरकार से मांग है कि कम से कम देश की इस राजधानी को जिस तरीके से एक घटना ने हम लोगों को उद्वेलित कर दिया, उन महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस को जवाबदेह बनाया जाए। उनकी जवाबदेही हो कि राजधानी की महिलाएं सुरक्षित हों। दूसरी तरफ जो कोख के कातिल हैं, जो भ्रूण हत्या करते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय: इसका इस विषय से कोई सम्बन्ध नहीं है। आप दो विषय उठा रहे हैं, जबकि आपको एक ही विषय पर बोलना है।

श्री जगदम्बिका पाल : एक ही विषय है। आज कारण क्या है कि 1000 लड़को पर 866 लड़कियां हैं। यह भी एक महत्वपूर्ण कारण है। चाहे महाराष्ट्र हो, उसमें 1000 लड़कों पर 837 लड़कियां हैं। यू.पी. में 1000 लड़कों पर 832 लड़कियां हैं। इस तरीके से जो यह प्रतिशत घटा है, मैं समझता हूं कि इस तबको को सुरक्षा मिलनी चाहिए।